RESEARCH HUB – International Multidisciplinary Research Journal (RHIMRJ)
Research Paper

'संप्रेषण' पत्रिका में समकालीन कविता'

उर्मिला कुमारी यादव

शोधार्थी, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर (राज.)

शोध सारांशः– कविता मूलः स्मृतिलक्षणा होती है तथा अपने इसी रूप में वह युगों पूर्व समक्ष आयी। वह स्मृति में जन्म लेकर, स्मृति में ही बनी रहती है तथा अन्ततः कवि भी वह स्मरणीय बना देती है। 'संप्रेषण' पत्रिका का अपना एक विकास रहा है जिसमें सभी प्रतिमाओं को आगे आने का स्वर्णिम अवसर मिला है तथा समर्थ, लब्धप्रतिष्ठ विद्वानों की कविताओं को पढ़ने तथा उनके बारे में जानकारी प्राप्त करने का भी विशिष्ट अवसर मिला है। 'संप्रेषण' पत्रिका के कुछ अंक तो इस प्रकार के रहे हैं जो कि विशिष्ट रूप से उन कवियों पर केन्द्रित रहे हैं। समकालीन कविता की सभी विशेषताओं को अपने में समेटे हुए है।यह पत्रिका अपनी विशिष्ट पहचान बनाये हुए है। समकालीन कविता वह कविता है जो एक समय विशेष में समान संदर्भों का द्योतन करती है। कविता का यह समान संदर्भ संकुचित न होकर नितांत व्यापक है। जब कोई रचनाकार अपने देश, समाज या व्यक्ति के जीवन काल में घटित घटना का प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से प्रभावित होकर उसके तथ्यों का यथार्थपूर्ण काव्यांकन करता है तो वह कविता समकालीन कविता कहलाती है। स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, मानवीय तथा सामाजिक चेतना, वैज्ञानिक बोध, राजनीतिक चेतना, ग्रामीण तथा नगरीय जीवन का चित्रण, प्रकृति चित्रण तथा शिल्प के प्रति नवीनता का आग्रह आदि समकालीन कविता की प्रमुख विशेषताओं को इन कवियों ने अपनी कविताओं में समाहित किया है।

संकेताक्षरः– संप्रेषण, समकालीन, आधुनिक, हस्तलिपि, संरक्षण, संघर्षरत, तज्जन्य, लब्धप्रतिष्ठ।

शोध विस्तार– 'समकालीन कविता हर युग में लिखी जाती है एवं हर कवि अपने समय का समकालीन होता है, परन्तु एक हर कवि अपने समय का समकालीन होता है, परन्तु एक काव्यधारा के स्वरूप में समकालीन कविता की प्रतिष्ठा आधुनिक युग की देन है। कुछ विद्वानों की धारणा है कि साठोत्तरी कविता का दूसरा नाम ही "समकालीन कविता" हैं, किन्तु ऐसा नहीं है। साठोत्तरी कविता जिसका वास्तविक प्रारम्भ सन् 1962 एवं 1965 में क्रमशः चीनी अथवा पाकिस्तानी आक्रमण के पश्चात् हुआ, एक ऐसी सीमा रेखा है, जहाँ से हिन्दी कविता में नया मोड़ लिया सातवें दशक के समाप्त होते–होते कविता स्वस्थ रूप में एक नए मिजाज एवं तेवर के साथ उभर कर सामने आई, जिसे 'समकालीन कविता' कहा गया।

'समकालीन' शब्द का सृजन 'सम' एवं 'कालिन' दो शब्दो से मिलकर हुआ है। 'सम' का अर्थ है–समान, समरूप, बड़ी, मिलता–जुलता आदि[1] संस्कृत के कुछ ग्रन्थों में 'सम' का अर्थ 'एक समान' भी बताया गया है[2] 'कालीन' शब्द का अर्थ है– 'किसी विशिष्ट समय (काल भाग) से सम्बन्ध रखने वाला।[3] इस प्रकार समकालीन शब्द का सामान्य अर्थ है– एक ही समय से सम्बन्ध रखने वाला तथा 'जो एक ही समय में हुए हों काव्य–जगत में समकालीन कविता वह कविता है, जो एक समय विशेष में समान संदर्भो का घोतन करती है। कविता का यह समान संदर्भसंकुचित न होकर नितान्त व्यापक है। जब कोई घटना किसी समाज या देश में व्यक्ति के अपने जीवन–काल में घटित हो, तो वह घटना समकालीन कहीं जाएगी एवं जब व्यक्ति उस घटना से प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप में प्रभावित होता हो, तो वह 'समकालीन व्यक्ति कहा जाएगा। इस प्रकार जब कोई रचनाकार उस घटना से प्रभावित होकर उसके तथ्यों का यथार्थपरक काव्यांकन करता है, तो वह कविता 'समकालीन कविता' कहलाती है।

समकालीन कविता का वास्तविक अर्थ समझने के लिए इसके कुछ पर्याय–बोध शब्दो की भाषायी चर्चा तो अनिवार्य है ही साथ ही गैर पर्याय–बोधक शब्दों का जो इसके सन्निकट हैं, विश्लेषण भी समीचीत होगा। इसके लिए प्रायः अद्यतन, तत्कालीन, वर्तमान, तत्क्षण, समसामयिक, सहज आदि शब्दों का प्रयोग किया जाता है। ये सभी शब्द देखने में एक–दूसरे के पर्याय तथा पर्याय के नजदीक समझ में आते हैं, किन्तु ऐसा नहीं है। सैद्धान्तिक दृष्टि से सभी समानार्थक शब्द एक जैसे भले ही प्रतीत हो, परन्तु व्यावहारिक रूप में सूक्ष्म अन्तर होता है। उदाहरणार्थ 'गिरिधर' एवं 'मुरलीधर' दोनों शब्द कृष्ण के समानार्थी है, पर गिरिधर कृष्ण के उस रूप के लिए हैं, जिसमें वे गोवर्धन पवर्तत उठाते है और मुरलीधर उनके द्वारा मुरली बजाने के समय का रूप हैं। एक जनरक्षक रूप है तो दूसरा जनरंजन रूप। यही व्यावहारिक अन्तर उपर्युक्त शब्दों में भी है।

राजस्थान के भरतपुर से 'उन्मेष' नामक शीर्षक से 1964 में प्रकाशित होने वाली पत्रिका जो बाद में 'संप्रेषण' नाम से जयपुर से प्रकाशित हुई इसमें समकालीन कवियों को विशिष्ट रूप से स्थान दिया गया तथा समय–समय पर इन कवियों की कविताएँ प्रकाशित होती रही है जिनसे पाठकों को एक सजग कवि की अनुभूति से अवगत होने का स्वर्णिम अवसर प्राप्त हुआ है।

2016, RHIMRJ, All Rights Reserved *ISSN:* 2349-7637 (Online)

इन कवियों में त्रिलोचन, केदारनाथ अग्रवाल, शमशेर सिंह, हेमंत शेष, अरूण कमल, राजेश जोशी, डॉ. बलदेव वंशी तथा हरीश करमचंदानी आदि का नाम प्रमुख है।

'संप्रेषण पत्रिका में समकालीन कविता को लेकर संपादक चंद्रभानु भारद्वाज जी ने लिखा है कि, "इधर समकालीन कविता की बहस में शब्द–प्रयोगों को लेकर चर्चाएँ हुई हैं। यह चर्चाएँ बडी सार्थक सिद्ध हों यदि किसी कवि की रचनाओं पर बात करते समय न केवल उसके द्वारा प्रयुक्त कुछेक शब्दों और मुहावरों की बहस का विषय बनाया जाए बल्कि उस कवि की मूल संवेदना और आंतरिक रूझानों की भी गहरी पड़ताल हो। कविता यदि एक निजी अनुभव और एक आंतरिक प्रक्रिया से अद्भूत रचना है तो भी कविता की संरचना बिना बाह्य दबावों के सम्भव नहीं। वे बाह्य दबाव कौन से हैं? शायद इस प्रश्न को जानने से पहले हम अपनी अभिरूचियों का आरोपण कवि पर करने लगते हैं।"[4]

'संप्रेषण' पत्रिका का अंक–141 शमशेर बहादुर सिंह पर केन्द्रित है। सर्वप्रथम इसमें शमशेर की हस्तलिपि में 'संध्या' कविता प्रकाशित हुई है जिसने पाठक वर्ग को शमशेर जी के इतने पास होने की वास्तविकता को चरितार्थ कर दिया है। विष्णु खरे, तथा बिष्णु चन्द्र शर्मा का लेख एवं संस्मरण बहुत गहराई से व्यक्त किए गए हैं। विष्णु चन्द्र शर्मा ने शमशेर की जीवन शैली को केन्द्र में रखकर उनके व्यक्तित्व के वैविध्य को रूपायित किया है तथा उसी के आधार पर शमशेर की रचना प्रक्रिया भी रेखंकित हो उठी है। "शमशेर एक पूरी जिन्दगी' एक दस्तावेज है जो कि सुरक्षित रखने योग्य है। शमशेर पर डॉ. रामविलास शर्मा मुक्तिबोध श्रीकान्त वर्मा जी के लेखों में अत्यधिक पठनीय सामग्री है। शमशेर की कविता 'इतने पास अपने' का एक उदाहरण दृष्टव्य है–

"यादों की द्वाभाएँ
बादल के भालों पर
चमकी–सी लय होने
धीरे–धीरे धीरे
इतने पास अपने।।"[5]

शमशेर को समझने में मुक्तिबोध का लेख 'शमशेर मेरी दृष्टि में उल्लेखनीय है। एक बड़ा कवि, दूसरे बड़े कवि के प्रति कितनी बड़ी सोच रखते हैं इसका यह श्रेष्ठ उदाहरण है। जटिल कवि मुक्तिबोध ने शमशेर पर जटिलता से नहीं लिखा है अपितु जटिलता को मुक्त किया है।

'संप्रेषण' पत्रिका में त्रिलोचन शास्त्री की कविता 'गोलियाँ अक्सर चल जाती हैं' कविता यहाँ उदाहरण स्वरूप दृष्टव्य है–

"कालिक की चलाधली है अबतो रामराज,
दिन की अब लम्बी हो आई परछाईयाँ
ठंढक छू जाती है
अब की जाड़ा होगा
ऐसा जैसा पहले कभी नहीं सुना
बला तो है देखी तुमने इस साल की
छेद कर दिए थे जैसे बादलों में किसी ने
बहलते पनाल थे।"[6]

त्रिलोचन आम आदमी, किसान तथा कामगार के मजबूर तथा मध्यमवर्गीय समाज के सच्चे तथा विश्वसीनय चित्रकार हैं। कविता को काल्पनिकता के रोमानी आकाश से लाकर धरती पर उतारकर सबकी सुख–दुख, सर्वस्व की पीड़ा करूणा से व्यापक जन–संसार को उन्होंने जोड़ा है। उनकी कविता में शालीनता, सहजता तथा गम्भीरता का रोचक प्रवाह है। इनकी कविता सपाट बयानी के साथ एक चित्र सा प्रस्तुत करती हुई जान पड़ती है।

इसी प्रकार राजेश जोशी की कविताओं का संप्रेषण में प्रकाशन हुआ जिनमें 'औरत गाती है', 'बच्चे', 'प्याज' आदि कविताएँ प्रमुख है यहाँ एक कविता 'बच्चे' उदाहरण स्वरूप उल्लेखित की गयी है–

"बच्चों के लिये
डारावनी कहानियाँ मत बुनों
वे तुम्हे मॉफ नहीं करेंगें।
बच्चों के लिये
मत बुनों भयावने सपने
वे तुम्हें माफ नहीं करेंगें।
मत गढों एक लूट–पाट से भरी
बारूद की दुर्गन्ध

और खून के धब्बों से भरी हुई।
ऐसा मत करो
कि बच्चे
तुमसे
नफरत करें
या घुटकर दम तोड दे।"[7]

राजेश जोशी की कविताएँ गहरे सामाजिक अभिप्राय वाली होती है व जीवन के गहरे, अंधकारमय संकट में आस्था का संचार करने वाली हैं। उनकी कविताओं में स्थानीय बोली, मिज़ाज तथा मौसम सब–कुछ व्याप्त है। उनका काव्य आत्मीयता तथा लयात्मकता के साथ रचा गया है। उनकी कविता मनुष्यता का संरक्षण करने हेतु निरन्तर संघर्षरत है। दुनिया के नष्ट होने का खतरा जितना जोशी जी को दिखाई देता है, उतना ही वे जीवन की संभावनाओं की खोज हेतु बेचैन दिखाई पड़ते है जो कि उनकी कविताओं में दृष्टिगोचर होता है।

'संप्रेषण पत्रिका में प्रकृति तथा जीवन के अनुभवों को सुन्दर तरीके से प्रस्तुत करने वाली 'हेमंत शेष' की कविताओं को भी विशिष्ट स्थान मिला है। जिनमें 'अन्तिम दृश्यों में **सायास**', 'आत्मा का गुणा भाग', 'याद रखना जगहें भूलना कुछ नाम' आदि प्रमुख है इनमें एक कविता 'आत्मा का गुणा–भाग' का उदाहरण दृष्टव्य है–

"जब नहीं लगाया जाता और
आगे हिसाब किताब
घरेलू माँगों
सीमित आमदनी और
बेशुमार खर्च के आंकड़ों से घबड़ा कर
अचानक कविता लिखने बैठ जाता हूँ
आश्वस्ति है उसमें नहीं होंगें
टेलीफोन बिजली पानी के बिल
नगर निगम के डिमांड नोटिस
बीबी, बच्चों की शिकायतें।"[8]

हेमंत शेष की कविताएँ आस–पास के ज़मीनी वातावरण से बहुत मजबूती के साथ जुड़ी हुई दिखाई देती हैं।

इसी प्रकार हरीश करमचंदानी की कविताएँ भी 'संप्रेषण' पत्रिका में अपनी विशेष पहचान बनाये हुए है। उनकी काठ की हॉडी', 'कद', 'चोरी', 'मापदंड', 'हादसे', आदि प्रमुख है जिनमें 'हादसे' कविता का उदाहरण दृष्टव्य है–

"एक ऐसे आदमी का आप क्या करेंगें
जो आपका हितैषी होने का दावा करे
और आपके सामने ही करे वार
उस डाल पर
जिस पर आप बैठे हैं
हाँ बताइये
उस आदमी का आप क्या करेंगे
जो बताये आपको की रास्ता इस तरफ है
ओर खुद बढ़ जाये उस तरफ।"[9]

हरीश करमचंदानी की कविताओं में सादगी और संप्रेषण है जो पाठक को प्रभावित करती है।

'संप्रेषण' पत्रिका में केदारनाथ अग्रवाल जी को भी विशिष्ट स्थान दिया गया है। ग्रामीण परिवेश में बचपन व्यतीत करने वाले केदार जी के मन में सबके साथ मिल–जुलकर रहने के संस्कारों ने जन्म लिया था। प्रकृति के प्रति अप्रतिम लगाव तथा अनन्य प्रेम भी उनके हृदय मेंस्थान पाता रहा। मार्क्सवाद के परिणाम स्वरूप उत्पन्न प्रगतिशील विचाराधारा से केदारनाथ जी प्रभावित थे यहउनके जीवन का आत्ममंथन का दौर था, जिसने आगे चलकर उन्हें एक समर्पित तथा अनूठे कवि बनने में योग दिया।

'संप्रेषण' का 142–143वाँ अंक केदारनाथ अग्रवाल पर केन्द्रित है। इसमें केदारनाथ अग्रवाल की 'कुछ चुनी हुई कविताएँ' तथा केदारनाथ अग्रवाल की मृत्युपूर्व लिखी 'नौ कविताएँ' प्रकाशित हुई हैं। 'खेत का दृश्य' कविता का एक अंश यहाँ दृष्टव्य है–

"आसमान की ओढ़नी ओढ़े
धानी पहने

फसल धॅधरिया,
राधा बनकर धरती नाची
नाचा हँसमुख
कृषक साँवरिया।"[10]

केदारनाथ जी के प्रकृति से सम्बन्धित विचारों तथा भाषा को आसानी से यहाँ देखा जा सकता है।

'केदारनाथ की मृत्युपूर्व लिखी नौ कविताएँ' प्रगतिशील चेतना तज्जन्य अर्थवत्ता को निरूपित करती है, जिसका एक उदाहरण यहाँ दृष्टव्य है–

"दिन है
कि इतवार की देह
पातहीन पेड़ हुई है
लगता है कि
सामने खड़ा है कोई एक
भूखा बेहाल कंगाल।"[11]

'संप्रेषण' के इस अंक में केदारनाथ अग्रवाल को पूरी तरह जीवंत कर दिया है। केदार समग्र जीवन के कवि हैं और उसके एक बड़े पक्ष को रचने वाले रचनाकार भी है।

निष्कर्षः–

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि 'संप्रेषण' पत्रिका ने डायरी विद्या को भी सहेज व समेट कर रखा है जो आने वाली पीढ़ी के लिए ज्ञानवर्धक साबित होगा। डायरी ने ही हमें विशिष्ट लोगों के विचारों से अवगत करवाने का भी कार्य किया है, यह 'संप्रेषण' पत्रिका का सराहनीय तथा प्रशंसनीय कार्य है। संप्रेषण पत्रिका ने हिन्दी साहित्य की विधा समकालीन कविता को अपने विभिन्न अंकों में उकेरा है। अतः संक्षिप्त रूप से यही कहा जा सकत है कि साहित्य के इस क्षेत्र में संप्रेषण' पत्रिका द्वारा किये गये सराहनीय कार्य को भुलाया नहीं जा सकता है।

संदर्भ सूची–

1. वामन शिवराम आप्टेः संस्कृत हिन्दी कोश, पृष्ठ 1072
2. "यथा सर्वाणि भूतानि धरा धारयते समम्"– मनुस्मृति (1/311)
3. वामन शिवराम आप्टेः संस्कृत हिन्दी कोश, पृष्ठ 273
4. संप्रेषण– अंक–3 (9–12), पृष्ठ–1
5. संप्रेषण– अंक–141, पृष्ठ–6
6. संप्रेषण– अंक–5, पृष्ठ–10
7. वही, पृष्ठ–15
8. संप्रेषण– अंक–133, पृष्ठ–24
9. संप्रेषण– अंक–134–135, पृष्ठ–20
10. संप्रेषण– अंक–142–143, पृष्ठ–17
11. वही, पृष्ठ–18

2016, RHIMRJ, All Rights Reserved

ISSN: 2349-7637 (Online)